मनोज
कॉमिक्स
संख्या 607
तबाही का
सूरज
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00/2
राम-रहीम
EDITED BY VAASU

• लेखक : पपिन्दर जुनेजा. चित्रांकन : दिलीप कदम, विजय कदम 'त्रिशूल कॉमिको आर्ट'.

दिसम्बर के महीने की सुबह। यानी कड़कड़ाती सर्दियों की सुबह। समय लगभग चार बजे। पूरा दिल्ली शहर रजाइयों में दुबका पड़ा था...
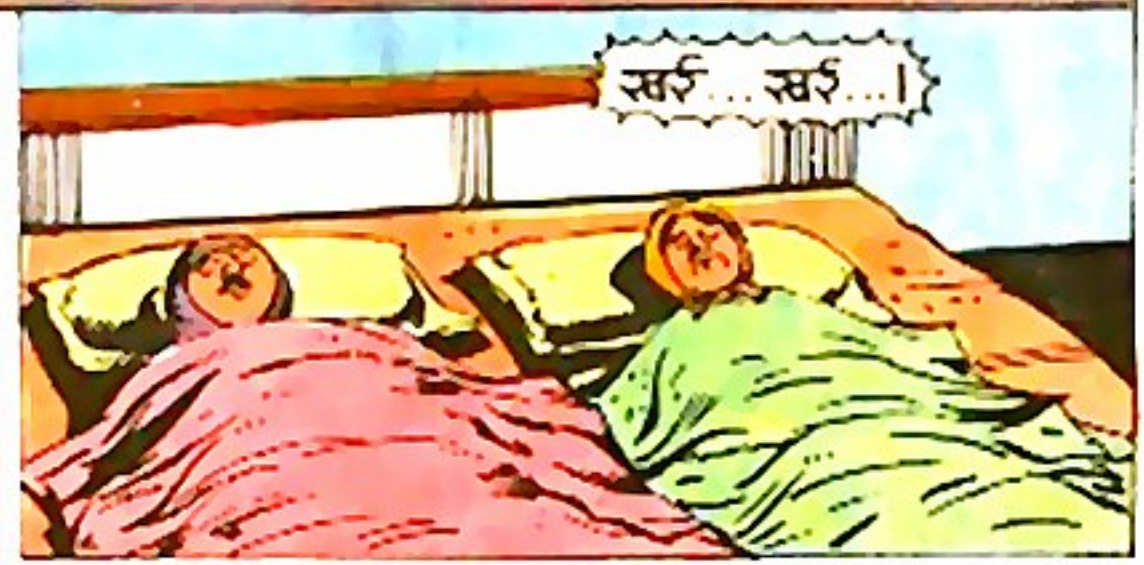
लेकिन जो इस समय जाग रहे थे उन्होंने देखा, आकाश में बिल्कुल सूर्य की तरह चमकता हुआ एक आग का गोला-सा प्रकट हुआ था।

इसी के साथ नगर का तापमान बदलने लगा। लोगों ने अपने ऊपर ओढ़ी रजाइयां उतारनी शुरू कर दीं।

फिर देखते ही देखते पूरे नगर में गर्मियों के महीनों का वातावरण बनने लगा।
अरी भागवान, जल्दी से नहा कर बाहर निकल, मेरा शरीर पसीना छोड़ने लगा है।
निकलती हूं, शोर मत मचाओ!

लोगों ने अपने-अपने घरों में लगे पंखों के स्विच आन कर दिये थे।
हे भगवान! लगता है, कलियुग अपने उतार पर है। अब जरूर प्रलय होगी।

लेकिन शीघ्र ही पंखों ने गर्म हवा छोड़नी शुरू कर दी।
उफ! दिसम्बर के महीने में लू। न जाने प्रकृति ने अपना नियम क्यों बदल दिया है?

अगले ही कुछ पलों में नगर का तापमान जून के महीने की गर्मी के अधिकतम तापमान को भी पार कर गया।
उफ ४५° सेल्स। जिस तेजी से नगर का तापमान बढ़ रहा है, अगर यही हाल रहा तो कुछ ही देर में आदमी चाय के पानी की तरह उबलने लगेंगे।
???
कार्यालय मौसम विभाग, नई दिल्ली

फिर विनाशकारी क्षण शुरू हुए। नगर का तापमान विश्व रिकार्ड तोड़ता हुआ ६०° सेल्सियस तक पहुंच गया तो यमुना का पानी भाप छोड़ने लगा...

... तथा पानी के अन्दर जीव-जन्तु तड़पने व मरने लगे।

लोगों के घर किसी बिस्कुट फैक्टरी की भट्ठी की तरह तपने लगे।
उफ। राम भइया! अब तो मारे गर्मी के शरीर सुलगने लगा है।
हां, पता नहीं आज यह कैसी तबाही का सूरज निकला है?

और इस तपन से बचने के लिए लोग जैसे ही घरों से बाहर निकलते —
हे वाहे गुरु! अन्दर ही नसां, बाहर तां अग बरस दी ऐ।

उधर मैट्रो रोड पर स्थित एक पेट्रोल पम्प तापमान ६०° सेल्स. तक पहुंचते ही धमाके के साथ उड़ गया।
आई... ई...!
धड़ाम

इस तरह लगभग एक घंटे तक विनाश का तांडव करने के बाद आकाश में निकला वह तबाही का सूरज एकाएक अपना रंग बदलने लगा...
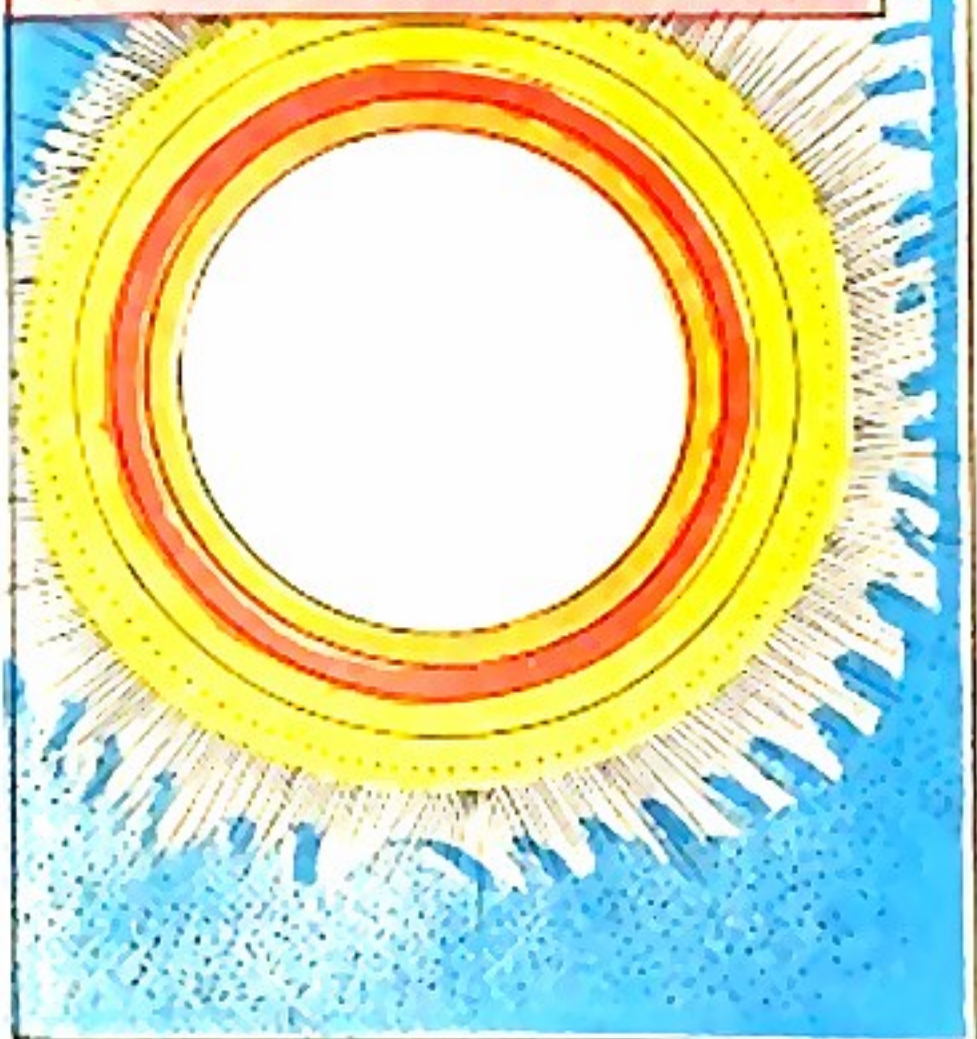
...फिर थोड़ी ही देर बाद वह सूरज किसी पूर्णमासी के चन्द्रमा की तरह शीतल हो गया।
हे भगवान, अब जाकर थोड़ी शांति मिली है।
उफ! अब शरीर को कुछ चैन मिला है।

और तभी—
हा...हा...हा...!
???
काना शैतान!
फोमाचू!
???
नगर निवासियो, आप सभी लोग मुझसे अच्छी तरह परिचित होंगे। मैं हूं विश्व का भावी सम्राट फोमाचू।
हा... हा... हा...! अभी तक तबाही का जो सूरज नगर को झुलसा रहा था, वह मेरा नया आविष्कार है...
फोमाचू!
???

...अगर मैं चाहूं तो अपने इस आविष्कार के द्वारा पूरी दुनिया को जलाकर राख कर दूं। और राख करूंगा भी, यदि जल्दी ही पूरी दुनिया ने मेरी अधीनता स्वीकार न की तो...।
तो प्यारे काने चचा, यह सब लीला तुम्हारी ही रची हुई थी।
??

मेरी यह चेतावनी भारत सरकार को ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व की सरकारों को है। यदि समस्त सरकारें एक माह के अन्दर ही मुझे विश्व सम्राट मानकर मेरी अधीनता स्वीकार नहीं करेंगी तो विश्व के प्रत्येक नगर में...
...ऐसा ही एक तबाही का सूरज उदय होगा। और इसका क्या परिणाम होगा, यह तो तुम लोग अच्छी तरह जान ही चुके हो।
हा... हा...हा...!

एक खास बात और। सबसे पहले मेरी अधीनता स्वीकार करने वाला देश, भारतदेश होगा। यह मेरी उन पराजयों का बदला होगा, जो भारत के महान सपूतों राम-रहीम ने मुझे कई बार दी हैं। हा-हा-हा!
काले शैतान, मैं तुझे विश्व सम्राट नहीं, बल्कि जूतों की माला पहनाकर अपने देश की जेल में चक्की पिसवाऊंगा।

और इसी के साथ आकाश में चमकता चन्द्रमा और फोमांचू का अक्स किसी गधे के सिर से सींग की तरह गायब हो गया।
घोर आश्चर्य है!
लगता है, अब जल्दी ही कुछ होकर रहेगा।

फिर ठीक एक घंटे बाद, जबकि नगर का वातावरण दिसम्बर माह के अनुरूप था, राम-रहीम सीक्रेट सर्विस के चीफ मुखर्जी अंकल के सामने थे।
उफ! मेरी तो समझ में नहीं आता राम बेटे कि यह जो नई मुसीबत यानी कि यह केस मैं तुम्हें सौंपने जा रहा हूं, उसके विषय में मैं तुम्हें क्या जानकारी दूं?

चीफ अंकल, सबसे बड़ी मुश्किल तो यह है कि हमें इस बार यह भी नहीं मालूम कि फोमांचू का नया अड्डा कहां है?
हां, लेकिन राम बेटे, हमारे देश के ही नहीं, बल्कि समूचे विश्व के वैज्ञानिक अब तक इस प्रयत्न में लगे चुके हैं...

...कि वह यह जान सके कि तबाही का सूरज अचानक कहां से प्रकट हुआ था और कहां विलीन हो गया था?
तो इसका मतलब वैज्ञानिकों की रिपोर्ट मिलने तक हमें इंतजार करना पड़ेगा, क्योंकि जब तक हमें फोमांचू के नए अड्डे की जानकारी नहीं होगी, तब तक हम कुछ भी तो नहीं कर सकते।
हां, इसके अलावा और कोई चारा भी तो नहीं है।
काश! फोमांचू के अड्डे का पता लग जाए तो इस बार मैं धरती के इस कलंक को हमेशा के लिए मिटा दूंगा।

इधर इस बार फोमांचू का नया अड्डा आकाशगंगा में कई गुमनाम ग्रहों में से एक ग्रह पर था, जिसे फोमांचू ने सम्राट ग्रह का नाम दिया था।
सम्राट ग्रह

इस सम्राट ग्रह को एक आधुनिक नगर के रूप में ढालने के लिए फोमांचू ने काफी मेहनत की थी। इसी ग्रह में स्थित एक प्रयोगशाला में —
हा...हा...हा! तुम्हारा प्रयोग सफल रहा प्रोफेसर विलियम। अब मुझे विश्व सम्राट बनने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती। हा...हा...हा!
क्षमा करें महामहिम! अभी आपको इतना खुश नहीं होना चाहिए, जितना कि आप...।

क्यों? भला हमें इतना खुश क्यों नहीं होना चाहिए प्रोफेसर?

महामहिम! अभी-अभी आपने सारी दुनिया को यह चेतावनी दी है कि वह एक माह के अन्दर-अन्दर आपकी अधीनता स्वीकार कर ले अन्यथा एक माह के बाद दुनिया के प्रत्येक राज्य में एक तबाही का सूरज उदय होगा, जो कि कतई संभव नहीं है।
क्यों?

क्योंकि आप तो जानते हैं कि मेरे इस नए आविष्कार का संचालन विद्युत तरंगों द्वारा होता है। यानी आपके अनुसार तबाही का जो सूरज है, वह एक प्रकार से बड़ा हीटर है....

...और उस हीटर के एलीमेंट को गर्म करने के लिए पांच लाख टन मेगावाट विद्युत की आवश्यकता होती है। और महामहिम, इस ग्रह में बने हमारे पावर हाउस की कार्य क्षमता सिर्फ तीन लाख टन मेगावाट है।
फिर?

एकाएक फोमांचू की इकलौती आंख किसी सुर्ख अंगारे की भांति दहकने लगी।

ठीक है प्रोफेसर, तुम्हें आदमी मिलेंगे, वो भी तीन दिन के अन्दर-अन्दर। बस तुम अभी से नए पावर हाउस के निर्माण कार्य की योजना शुरू कर दो।
कहने के साथ ही फोमांचू लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ प्रयोगशाला से बाहर निकल गया।

उसी रात कथित सम्राट ग्रह से एक प्रकाशपुंज धरती की ओर बढ़ा।

कुछ ही घंटों बाद उस प्रकाशपुंज को न्यूयार्क सेंट्रल जेल के ठीक ऊपर देखकर जेलकर्मी चौंक पड़े —
उफ! यह आंखों में चकाचौंध कर देने वाली रोशनी कैसी है?
???
अरे! यह रोशनी का दायरा कैसा है?
??

फिर वही प्रकाशपुंज सेंट्रल जेल के मैदान के बीचो-बीच उतरकर रुक गया।
आश्चर्यजनक!
???

अगले ही पल जेलर न जाने किस प्रेरणा के अंतर्गत चीख उठा —
सिपाहियो, कवर कर लो इस रोशन दायरे को।

सिपाहियों ने तुरन्त अपने आफिसर के आदेश का पालन किया, किन्तु तभी उस रोशन दायरे के चारों तरफ से गोलियों की एक बाढ़-सी निकली और—

देखते ही देखते जेलर को छोड़कर जेल के सारे कर्मचारी शहीद हो चुके थे।
हे भगवान, यह कौन सी मुसीबत है?
उफ! पता नहीं यह क्या बला है?
जेलर मैदान में खड़ा थर-थर कांप रहा था।

तभी एक क्षण के लिए वह रोशनी का दायरा मैदान से गायब हो गया।
??

और अगले ही पल उस स्थान पर—
अरे! यह तो कोई आधुनिक ढंग की उड़न तश्तरी मालूम पड़ती है।
???

फिर—
अरे! यह कौन हो सकता है?

क... कौन हो तुम?
हा... हा... हा! तुम नहीं, आप कहो जेलर। क्योंकि मैं हूं विश्व सम्राट फोमांचू! हा... हा... हा!
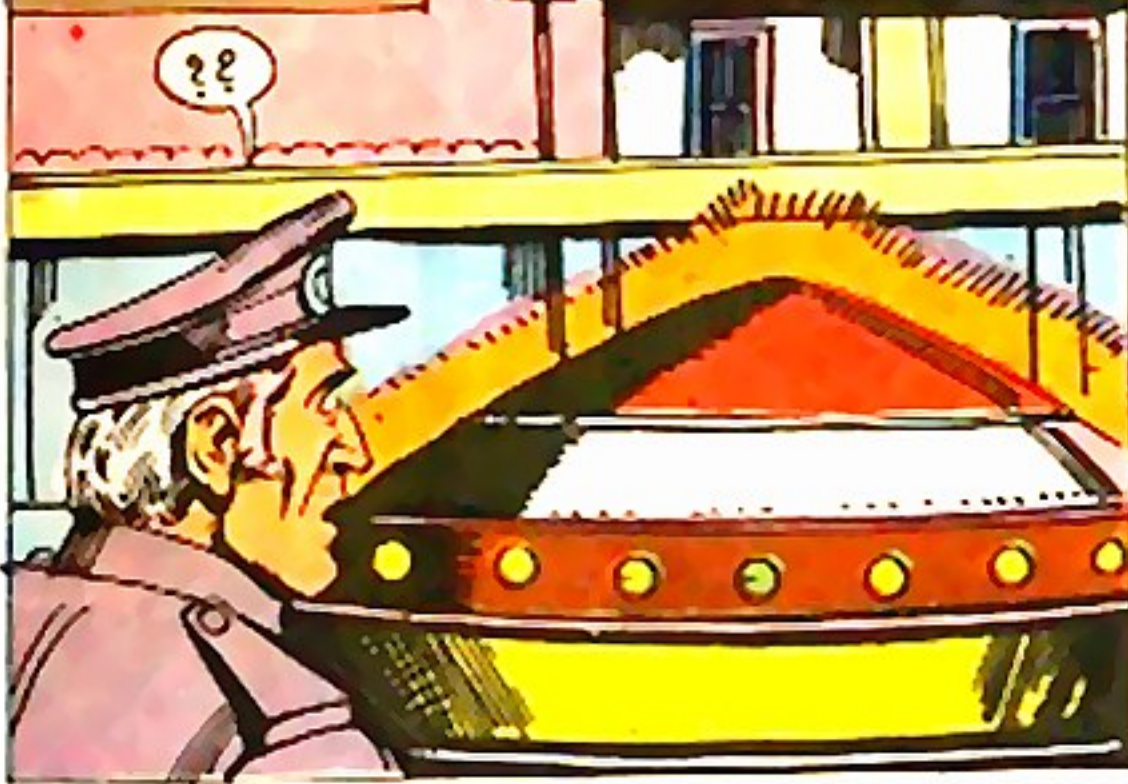
फिर कुछ ही देर बाद जेलर जेल के एक हिस्से में एक लम्बी कतार में बनी कोठरियों में से एक कोठरी का दरवाज़ा खोल रहा था।

फिर दूसरी बैरिक के सामने पहुंचकर —
और यह है हमारे देश का वो मुजरिम, जिसे इंसानों का कत्ल करने में उतना ही मजा आता है, जितना कि एक बच्चे को फाइव स्टार चाकलेट खाने में।
गुर्र... र...
वैरी गुड!

इस तरह न्यूयार्क जेल के छंटे हुए करीब पांच सौ कैदी लेकर फोमांचू सम्राट ग्रह की ओर चल पड़ा।
साथियो, अब तुम लोग किसी कैदी की नहीं, बल्कि आजाद इंसानों की जिन्दगी जीओगे।
हिप-हिप हुर्रे!

और दूसरे दिन सुबह होते ही चीन की सबसे सुरक्षित समझी जाने वाली वांग किन जेल के जेलकर्मी एकाएक चौंक पड़े —

अरे-यह क्या? यह तो कोई उड़नतश्तरी मालूम पड़ती है। लेकिन यह अचानक आई कहां से?
???

फिर जब फोमांचू उड़नतश्तरी से बाहर आया तो जेलर भी वहां पहुंच चुका था।
फोमांचू!

और अगले ही पल जैसे जेलर को कुछ ख्याल आया। वह जोर से चीख पड़ा —
गाइर्स, घेर लो इसे। यह यहां से जीवित बचकर नहीं जाना चाहिए।

लेकिन इससे पहले कि कोई और अनहोनी घटती।

ठहरो!

कामरेड चिन चूं। यानी चीन के खुफिया विभाग का चीफ।

???

!!!

कामरेड, यह वही व्यक्ति है जिसने न्यूयार्क सेंट्रल जेल से करीब पांच सौ कैदियों का अपहरण किया है। मैंने इसके और इसके हुलिए के बारे में आज के समाचारों में काफी बारीकी से पढ़ा है।

मैं इसके बारे में तुमसे बेहतर जानकारी रखता हूं। समझे?

य... यस कामरेड!

फिर कामरेड चिन चूं फोमांचू की ओर आकर्षित हुआ।

मिस्टर फोमांचू, मैं जानता हूं कि तुम्हें तुम्हारे उद्देश्य से रोकने की हमारी सारी कोशिशें बेकार साबित होंगी। अतः फिलहाल मैं किसी खून खराबे के पक्ष में नहीं हूं।

हा... हा... हा...! वाकई तुम बहुत ही समझदार हो कामरेड!

लेकिन मिस्टर फोमांचू, मेरी समझ में यह नहीं आता कि तुम न्यूयार्क सेंट्रल जेल या हमारी जेल से कैदियों को ले जाकर उनका क्या करोगे?

कामरेड, यह सारे कैदी मेरे विश्व सम्राट बनने में मेरी मदद करेंगे। बदले में मैं इन्हें सम्मानित जीवन जीने का मौका दूंगा!

कहीं यह काना पागल तो नहीं हो गया?

वह! विश्व की जेलों से ले जाए गए भयानक अपराधी, जो अपने वतन, अपने सगे-संबंधियों के किसी काम न आ सके, वह भला विश्व सम्राट बनने में तुम्हारी क्या मदद करेंगे?

???

यह अपने-अपने सोचने का ढंग है कामरेड! मेरे ख्याल से तो वह सारे कैदी, जो तुम्हारी जेलों में अपनी मौत की प्रतीक्षा कर रहे हैं, यदि उन्हें जीने का मौका मिलेगा...
...तो वह मेरे लिए एक आम इंसान से ज्यादा वफादार व काम के आदमी साबित होंगे।
हूं, अब एक आखिरी सवाल और। क्या वाकई तुम्हारे चैलेंज अनुसार एक माह बाद विश्व के प्रत्येक राज्य में
...ठीक वैसा ही तबाही का सूरज उदय होगा, जैसा कि आज से दो दिन पूर्व भारत में उदय हुआ था।
हां कामरेड। फोमांचू खोखली धमकियों में कभी विश्वास नहीं करता। समझे?
समझ गया।
काश! कामरेड अचानक यहां न आए होते तो मैं इस काले शैतान को मार गिराता!
और फिर थोड़ी ही देर बाद चीन की सबसे सुरक्षित समझी जानेवाली जेल के करीब सात सौ खतरनाक कैदी लेकर फोमांचू अपनी विशेष उड़नतश्तरी की ओर बढ़ रहा था।
मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं फोमांचू, क्योंकि तुम्हारे विश्व सम्राट बनते ही पूरी दुनिया में अपने ही एक चीनी भाई का राज होगा।
चलो साथियो, धरती का सबसे बड़ा शैतान, फोमांचू की दुनिया का सबसे बड़ा इंसान होगा। हा...हा...हा!
यह काना अजीब सनकी है।
???

दूसरे दिन यह खबर समाचारपत्रों, आकाशवाणी व दूरदर्शन के माध्यम से पूरे विश्व में फैल चुकी थी।
नाश्ते की मेज पर इसी खबर को अखबार में पढ़ते हुए राम की आंखें पहले तो कुछ सोचने वाले अंदाज में सिकुड़ीं।

विश्व के खतरनाक अपराधी फोमांचू द्वारा न्यूयार्क सेंट्रल जेल व चीन की जेल से करीब बारह सौ कैदियों का अपहरण
???

फोमांचू द्वारा चीन व न्यूयार्क की जेलों में से करीब बारह सौ कैदियों का अपहरण। न्यू-यू-प्रे..................

फिर मन ही मन कुछ निर्णय करने के बाद उसकी आंखें चमकने लगीं।
रहीम, जल्दी से नाश्ता समाप्त करो। हमें तुरंत चीफ अंकल से मिलने चलना है।
ओ के राम भइया!
करीब बीस मिनट बाद जब राम और रहीम ने सीक्रेट सर्विस के चीफ मुखर्जी अंकल के आफिस में प्रवेश किया तो वह किसी गहरी सोच में डूबे हुए थे।
गुड मार्निंग चीफ अंकल!
अ... आ, मार्निंग! आओ राम बेटे, मैं तुम लोगों का ही इंतजार कर रहा था।

चीफ अंकल, लगता है, आप आज के समाचारपत्र को पढ़ने के बाद बड़ी गंभीरता से कुछ सोच रहे थे।
हां राम बेटे, मैं सोच रहा था कि अपने देश की प्रमुख जेलों की सुरक्षा व्यवस्था के बारे में मैं कौन सा कदम निर्धारित करूं...

...क्योंकि संभव है अन्य देशों की जेलों की तरह फोमांचू का आक्रमण हमारे देश की जेलों पर भी हो।

चीफ अंकल, इस संबंध में मैं आपके पास एक योजना लेकर आया था।
कैसी योजना?
फिर राम, चीफ मुखर्जी को अपनी योजना समझाने लगा।

उसकी पूरी योजना सुनकर –
राम बेटे, बेशक तुम्हारी योजना शानदार है, लेकिन यदि इसका प्रथम चरण ही पूरा न हुआ यानी...।
लेकिन चीफ अंकल, मुझे पूरा विश्वास है कि राम भइया की योजना पूर्णतया सफल होगी।
और फिर चीफ अंकल, मेरी समझ में इसके सिवाय और कोई दूसरा रास्ता भी तो नहीं है।

उसी रात तिहाड़ जेल के विशाल मैदान में एक प्रकाशपुंज उतरकर जैसे ही एक आधुनिक उड़न तश्तरी के रूप में परिवर्तित हुआ, एकाएक पूरा मैदान तेज़ रोशनी से नहा उठा।

अगले ही पल –
आओ प्यारे काने चचा, हमें तुम्हारा ही इंतजार था। अब जिन्दगी भर इसी जेल की कालकोठरी में आराम करना।
???

वाह! प्यारे भतीजो वाह! बहुत अरसा हो गया था तुम दोनों की प्यारी-प्यारी सूरतें देखे। तुम दोनों को सही-सलामत देख कर तुम्हारे चचा को बहुत प्रसन्नता हुई है।
कहते हुए फोमांचू ने अपनी विशेष पोशाक में लगा एक गुप्त बटन दबा दिया...

... और अपने चेहरे पर विषैली मुस्कान लिए सीढ़ियां उतरने लगा।
आओ काने शैतान, आज तुम्हारा अंतिम समय आ गया है।

फोमांचू के नीचे उतरते ही राम-रहीम ने एक साथ उस पर छलांग लगा दी।

लेकिन अगले ही पल—
आई...ई...
हा...हा...हा!
उफ!

हा...हा...हा!
राम भइया, इसके तो पूरे शरीर में बिजली का करेंट दौड़ रहा है।
हां!

आओ प्यारे भतीजो, क्या एक ही वार में हिम्मत हार बैठे? आओ, अपने चचा से गले तो मिल लो। हा...हा...हा!
कुत्ते, मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।

अवश्य चचा, अवश्य। गले तो हम जरूर मिलेंगे, पर तुमसे नहीं, तुम्हारी लाश से।
कहने के साथ ही राम ने अपनी जेब से रिवाल्वर निकाला...

...और फिर पागलों की तरह फोमांचू पर फायर करने लगा।
हा...हा...हा!
धांय...धांय...धांय...
??
लेकिन गोलियां फोमांचू के शरीर तक पहुंचने से पहले ही किसी अदृश्य दीवार से टकराती, कुछ चिंगारियां सी निकलतीं, फिर गोलियां नष्ट हो जातीं।

अपने प्रयास को व्यर्थ जाता देखकर झुंझलाए हुए राम ने अपना खाली हो चुका रिवाल्वर फोमांचू पर खींच मारा।

लेकिन रिवाल्वर फोमांचू के शरीर से टकराने से पहले ही किन्हीं अदृश्य विद्युत तरंगों से टकराया और जलकर राख हो गया।

कहने के साथ ही फोमांचू ने अपनी पोशाक में लगा एक अन्य बटन दबाया।

अगले ही पल उस विचित्र पोशाक से दो चिंगारियां-सी निकलकर राम-रहीम की तरफ बढ़ीं।

उन चिंगारियों के राम-रहीम के शरीर से टकराते ही—
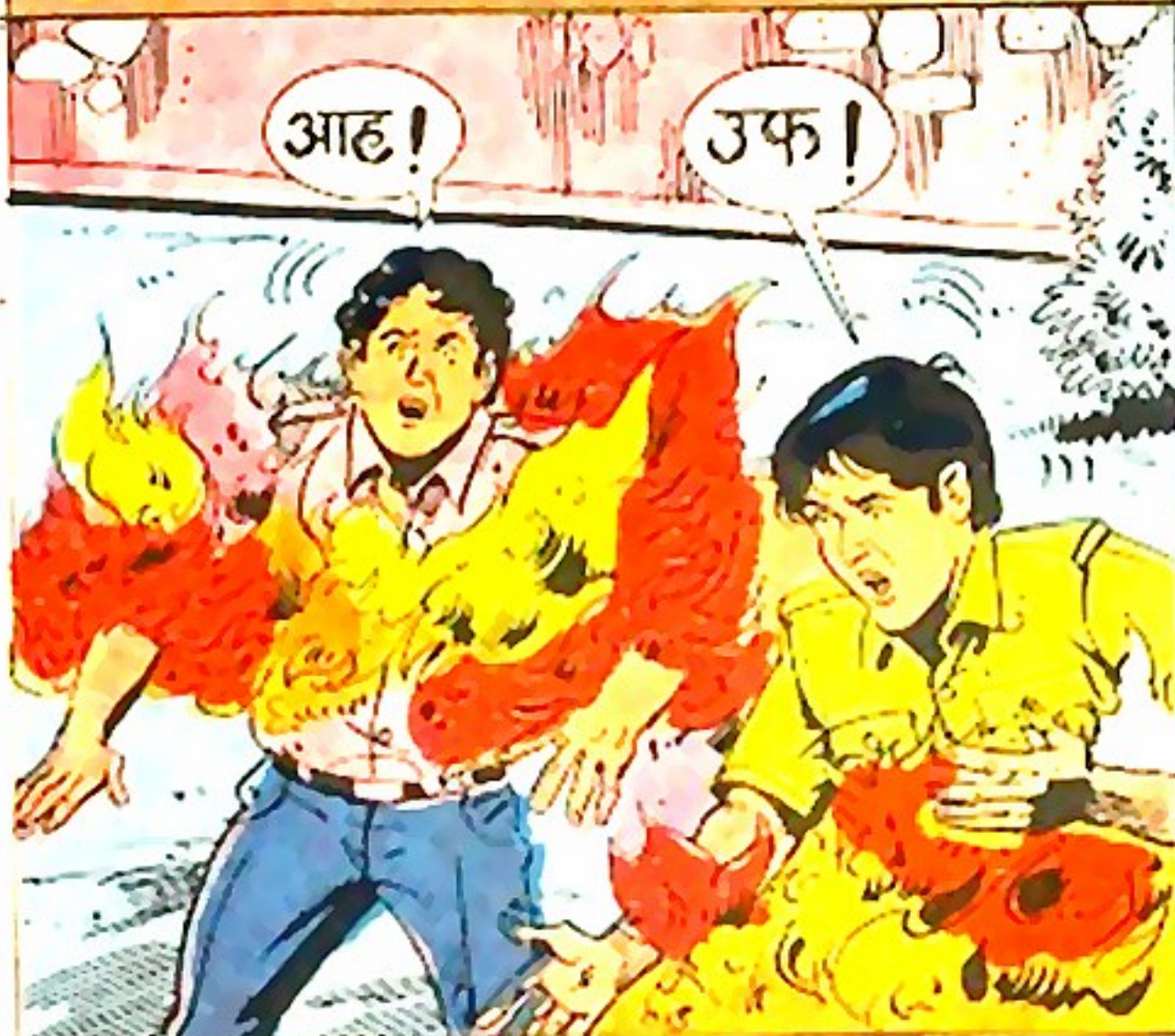
देखते ही देखते भारत के दो महान सपूतों का अंत हो गया।
हा...हा...हा! मूर्ख! मुझसे टकराने चले थे। हा...हा...!
अपनी सफलता पर खुश होते हुए फोमांचू ने आगे बढ़ने के इरादे से अभी पहला कदम ही उठाया था कि:-
रेट...रेट
??
रेट...रेट
तड़...तड़
रेट...रेट

रेट...रेट
हा...हा...हा! मूर्ख इन्सानों! फोमांचू को रोकना तुम्हारे बस की बात नहीं है। मैं अपने उद्देश्य में सफल होकर रहूंगा।
रेट...रेट
तड़...तड़
धांय
तड़...तड़

अपना पहला आक्रमण असफल होते देख जेल-कर्मियों ने उस पर दस्ती बमों की वर्षा की।
भड़ाम..भड़ाम

लेकिन अगले ही पल जब धुएं का बवंडर छंटा।
हा...हा...हा!
???
उफ! यह आदमी है या जिन्न? इतनी भयंकर बमबारी में भी यह सुरक्षित है।
क्या?

फिर फोमांचू ने जेलकर्मियों को आश्चर्य से निकलने का मौका नहीं दिया। उसने अपनी विशेष पोशाक में लगे एक अन्य गुप्त बटन को दबाया। उसके जिस्म के चारों ओर से चिंगारियां निकलकर उनकी ओर बढ़ीं –
हा...हा...हा!
टिंची...टिंची
टिंची
टिंची...टिंची

और अगले ही पल–
आई...ई...
उफ!
आ...ई...ई!
आई...!

इस तरह अपना रास्ता साफ कर फोमांचू जेलर के आफिस में पहुंचा और वहां से जेल के खतरनाक कैदियों की फाइलें लेकर जेल की बैरिकों की ओर बढ़ा...

...फिर –
हूं, तो तुम ही चंबल के मशहूर डकैत रामआसरे बोलो, आजीवन इसी जेल में सड़ना चाहते हो या आजाद होना चाहते हो ?
मैं आजाद होना चाहता हूं।
गुड!

इसी तरह दूसरी बैरिक में -
तुम रंगा-बिल्ला हो। जेल के रिकार्ड के अनुसार परसों सुबह तुम दोनों को फांसी दी जानी है। बोलो, जिन्दगी चाहते हो या मौत ?
जिन्दगी!
मुझे भी यही उम्मीद थी। बाहर निकलो।
इस तरह तिहाड़ जेल के करीब छः सौ कैदियों को लेकर फोमांचू सम्राट ग्रह की ओर चल पड़ा।
दूसरे दिन पूरे भारत में शोक दिवस मनाया जा रहा था। सेना के करीब दो सौ जवानों और राम-रहीम के अंतिम संस्कार के समय सेना की विशेष मातमी धुन बज रही थी।
हाय! मेरे बच्चों, तुम्हें किसकी नजर लग गई ? बू...हू...हू...!
बस करो राधा। शहीदों की चिता पर रोया नहीं करते। सुबक...सुबक...।
मेरे बच्चों, तुम्हारी कुर्बानी बेकार नहीं जाएगी। फोमांचू को तुम्हारे खून की एक-एक बूंद का हिसाब देना होगा।
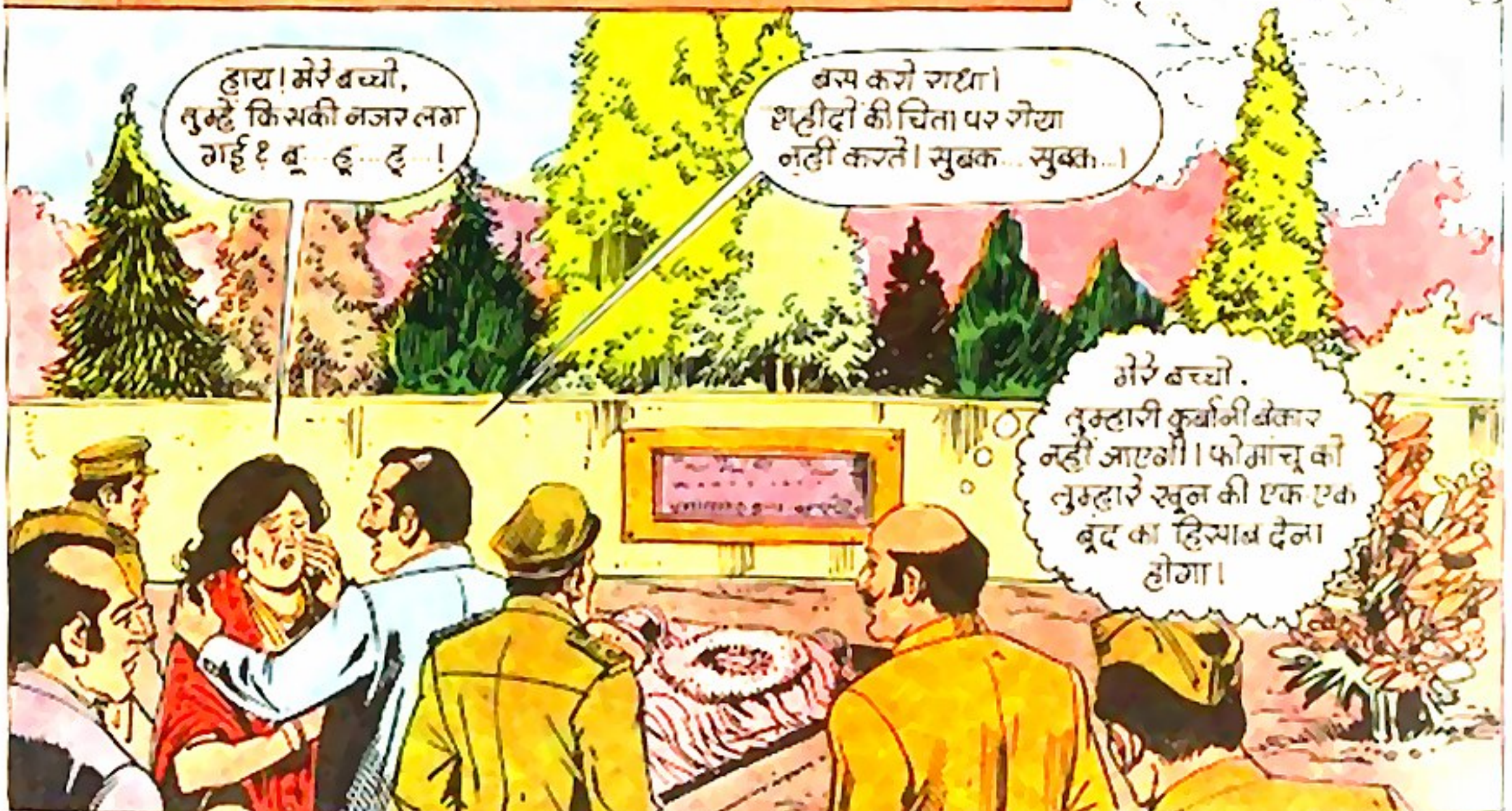
इधर सम्राट ग्रह में –
हा... हा... हा! मेरे साथियो, आज मेरे लिए बहुत खुशी का दिन है। आज मेरे रास्ते की सबसे बड़ी रुकावट, भारतीय सीक्रेट सर्विस के एजेन्ट राम-रहीम के रूप में, हमेशा-हमेशा के लिए चिता में जलकर राख हो चुकी है...
???

...और अब जल्दी ही मेरा विश्व सम्राट बनने का सपना पूरा होगा। इस सुअवसर पर मैंने एक प्रतियोगिता का आयोजन किया है...

...आप सब लोग अपनी-अपनी सरकारों की नजरों में मुजरिम थे, लेकिन मेरी नजरों में आप सब जांबाज, बहादुर व दिलदार इंसान हैं। अतः अब आप लोगों का सम्राट ग्रह के उच्चाधिकारियों के रूप में चुनाव होगा।
???
अजीब सनकी है यह काला।

और इस चुनाव की पहली व आखिरी शर्त ये है कि जो प्रत्याशी अपने प्रतिद्वन्द्वियों को द्वंद्व युद्ध में हरा देगा, वही विजयी माना जाएगा। बोलो, आप लोगों को चुनाव की यह शर्त मंजूर है?
हमें मंजूर है।
मंजूर है।
हमें भी मंजूर है।

गुड ! अब पहला मुकाबला होगा सम्राट ग्रह के महामंत्री का, फिर दूसरा सेनापती का व तीसरा मुकाबला होगा मेरे दो अंगरक्षकों के लिए।

अब आप लोगों में से जो महामंत्री पद के इच्छुक हों, वह मैदान में आ जाये।

अगले ही पल मैदान में आठ कैदी महामंत्री के पद के प्रत्याशी के रूप में उतर आए।

फिर फोमांचू के संकेत पर दो प्रत्याशियों का आपस में द्वंद्व युद्ध के रूप में मुकाबला शुरू हुआ।

जल्दी ही पाकिस्तान में विक्षिप्त हत्यारे के नाम से प्रसिद्ध हारून रशीद नाम के कैदी ने अपने प्रतिद्वंद्वियों को हराकर ...

... विजय हासिल की—
सम्राट ग्रह के प्रधानमंत्री हारून रशीद की जय हो।
विश्व सम्राट फोमांचू की जय-जयकार हो।
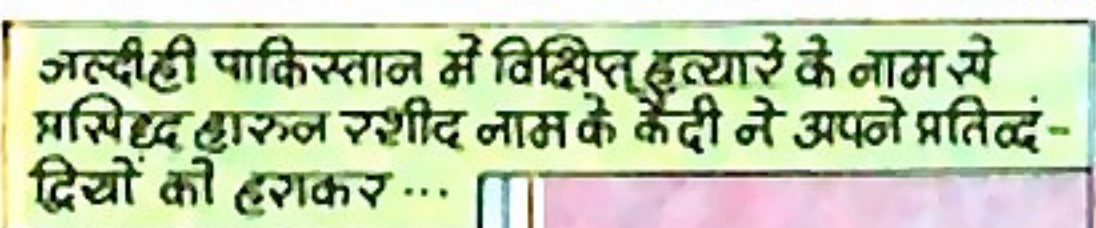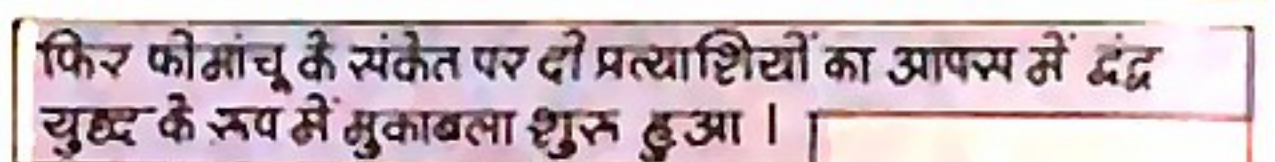
फिर सेनापति के पद के लिए मुकाबला शुरू हुआ।
ढिशुम
आह!

फिर रूस के एक खतरनाक स्मगलर किंग ने अपने पांच प्रतिद्वंद्वियों को हराकर अपने आपको सेनापति पद के लिए श्रेष्ठ सिद्ध कर दिया।
सेनापति स्लातीव जिन्दाबाद!

और अंत में भारत के दोनों खतरनाक हत्यारे रंगा-बिल्ला अपने प्रतिद्वंद्वियों को हराते हुए...
कड़ाक
आई...!
धाड़
आह!
उफ!
उफ।
ढिशुम

...फोमांचू के अंगरक्षकों के रूप में चुने गए।
वाह! मुझे तुम दोनों जैसे ही जांबाज अंगरक्षक चाहिए थे।
अभी तुमने हमारी जांबाजी देखी ही कहां है फोमांचू?
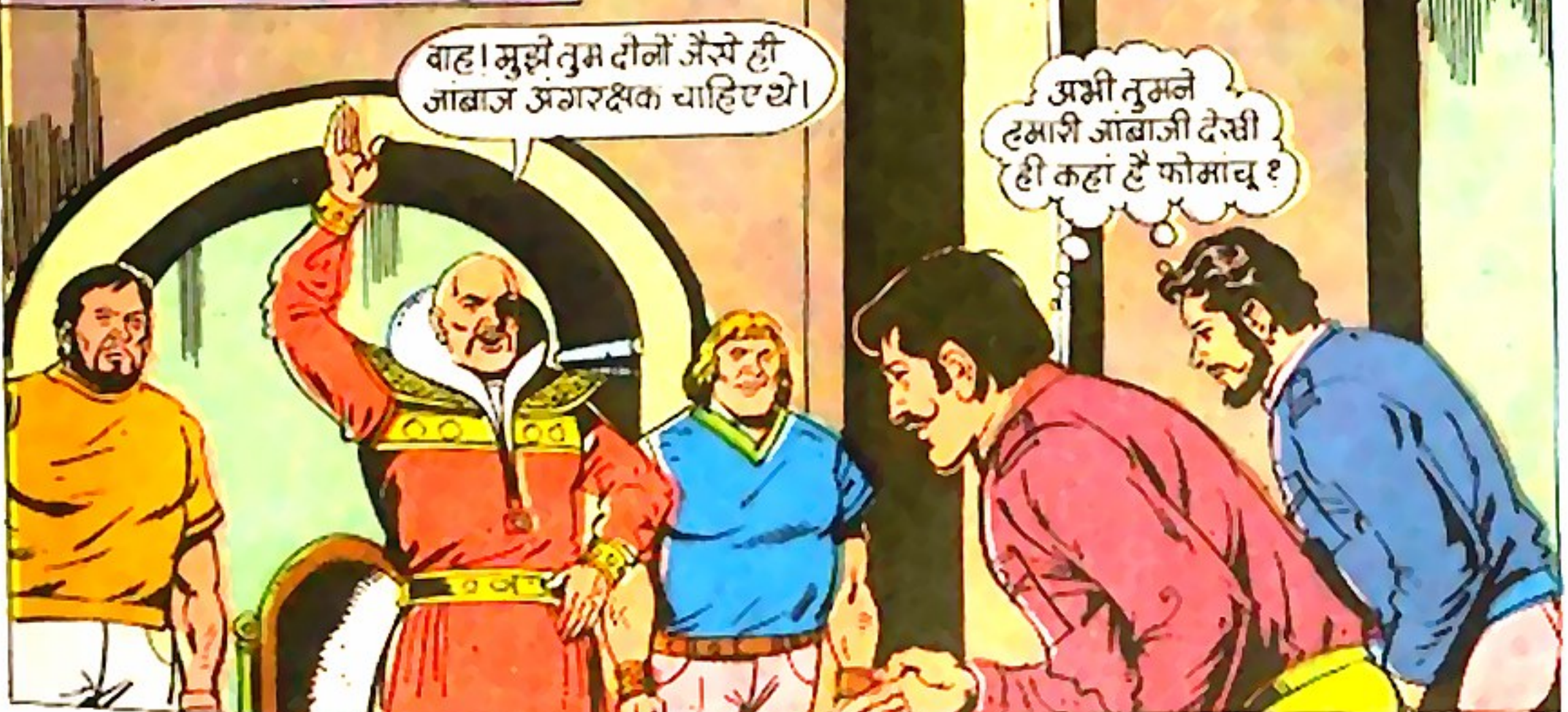
दूसरे दिन फोमांचू महामंत्री हारून रशीद और सेनापति स्नातोव को सम्राट ग्रह की सैर करा रहा था।
वाह! इतना सुन्दर नगर। वाकई इसके निर्माण के लिए फोमांचू को काफी मेहनत करनी पड़ी होगी।

साथ ही साथ वह उन्हें अपनी योजनाओं से भी अवगत करा रहा था।
ये नव निर्माणाधीन पावर हाउस है। मेरे विश्व सम्राट बनने में केवल उतना ही समय बाकी है, जितना कि इस पावर हाउस के निर्माण में लगेगा।
हूं!

ये है मेरी प्रयोगशाला!

और ये हैं प्रोफेसर विलियम। इन्हीं के सहयोग से मेरा विश्व सम्राट बनने का सपना पूरा होगा।
महामहिम, यह तो आपकी महानता है, वरना मैं तो अपने जीवन से निराश एक बेमकसद जीवन जी रहा था।

इसी तरह पन्द्रह दिन गुजर गए और इन पन्द्रह दिनों में हारून रशीद महामंत्री, सेनापती स्नातोव व रंगा-बिल्ला फोमांचू की पूरी योजना व सम्राट ग्रह के चप्पे-चप्पे से वाकिफ हो चुके थे।
सेनापति स्नातोव, हमें मास्टर की योजना को पूरा कराने के लिए अपनी तरफ से जी-जान से कोशिश करनी चाहिए।
हां...

...और उसके लिए हमें पावर हाउस के निर्माण कार्य को जल्द से जल्द पूरा करवाना होगा।
ऐसा कभी नहीं होगा। हम फोमांचू के प्रत्येक इरादे को खाक में मिला देंगे।

और उसी रात रंगा-बिल्ला के मध्य एक गुप्त मंत्रणा हुई...

...और बिल्ला अपनी स्टेनगन लेकर शस्त्रागार पहुंचा।
सर! आप रात के इस समय...?
हां, शायद मेरी गन में कुछ खराबी आ गई है। मैं इसे बदलना चाहता हूं।

ठीक है सर! आप अन्दर आकर अपनी गन बदल लीजिए।

शस्त्रागार के अन्दर थोड़ी तलाश के बाद—
वाह! बन गया काम! फौलादी अब जल्दी ही तेरे साम्राज्य में मौत का साम्राज्य होगा।
टाइम बम

अगले ही पल बिल्ला ने कुछ टाइम बम अपने वस्त्रों में छुपाए और एक टाइम बम में एक विशेष टाइम फिक्स करके शस्त्रागार में छुपा दिया...
टिक...टिक...!

...फिर जल्दी-जल्दी कुछ दस्ती बम अपनी जेब में डाले और एक स्टेनगन लेकर शस्त्रागार से बाहर निकल आया।
गन बदल लाए सर?
हां!
फिर अगले ही पल बिल्ला की जीप का मुंह फौलादी की प्रयोगशाला की ओर था।

और इधर रंगा ठीक एक घंटे बाद अपने कमरे से बाहर निकलकर सामने वाली भव्य इमारत की तरफ बढ़ा।
अगर बिल्ला के कार्य में कोई रुकावट नहीं आई होगी तो वह अपना कार्य समाप्त करके यहां पहुंचने ही वाला होगा। अतः योजनानुसार मुझे अपना मोर्चा संभाल लेना चाहिए।

और फिर जैसे ही रंगा भव्य इमारत के गेट पर पहुंचा।
रोमांचू निवास
क्या बात है रंगा, तुम रात के इस समय यहां क्यों आए हो ?
??
वाटसन, मैंने सुना है कि तुमने मुझे गाली दी है।

क्या बकते हो ? मुझे क्या पागल कुत्ते ने काटा है, जो मैं तुम्हें गाली दूंगा।

हां सुअर, तू सचमुच पागल ही गया है। मैं तुझे जिंदा नहीं छोडूंगा।
धड़ाक
???
उफ!

ठहर, तेरी तो...!
आओ बेटा, अब तो तुम मेरी चाल में फंस ही गए हो!
कहने के साथ ही क्रोधित गार्ड वाटसन रंगा की ओर झपटा था।

लेकिन तभी –
भड़ाक
आह!

भौंचक्का-सा दूसरा गार्ड चीख पड़ा –
रुक जाओ रंगा, यह क्या पागलपन है ?

और शायद इसी उठा-पटक की आवाजों से कोमांचू की नींद खुल गई थी।
??
तू भी इसकी हिमायत करता है। यह ले...!
ढिशुम
उई...ई...!

रंगा! यह सब क्या हो रहा है?

लेकिन रंगा ने कोमांचू को नज़रअंदाज कर दिया और ज़मीन पर गिरे वाटसन को उठाया, फिर-
उफ!
हाय!
भड़ाक
???

वो मारा! कोमांचू मेरी योजनानुसार बौखलाहट में बिना अपनी विशेष पोशाक पहने ही बाहर आ गया है।

गार्ड्स, यह शायद पागल हो गया है। भून डालो इसे!
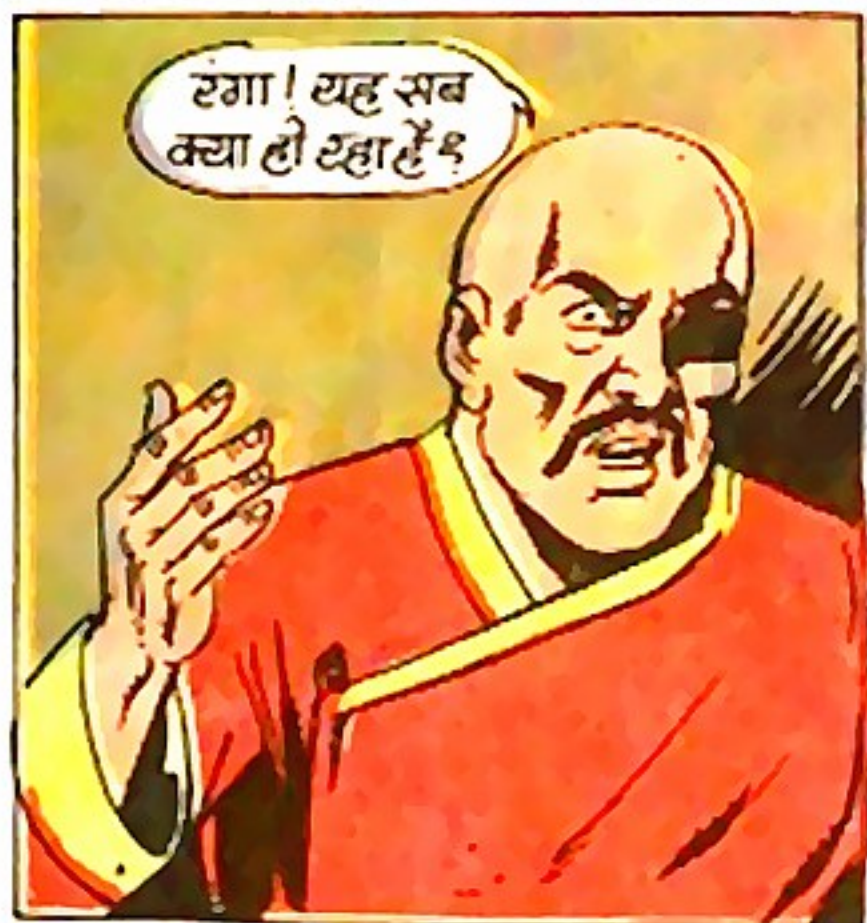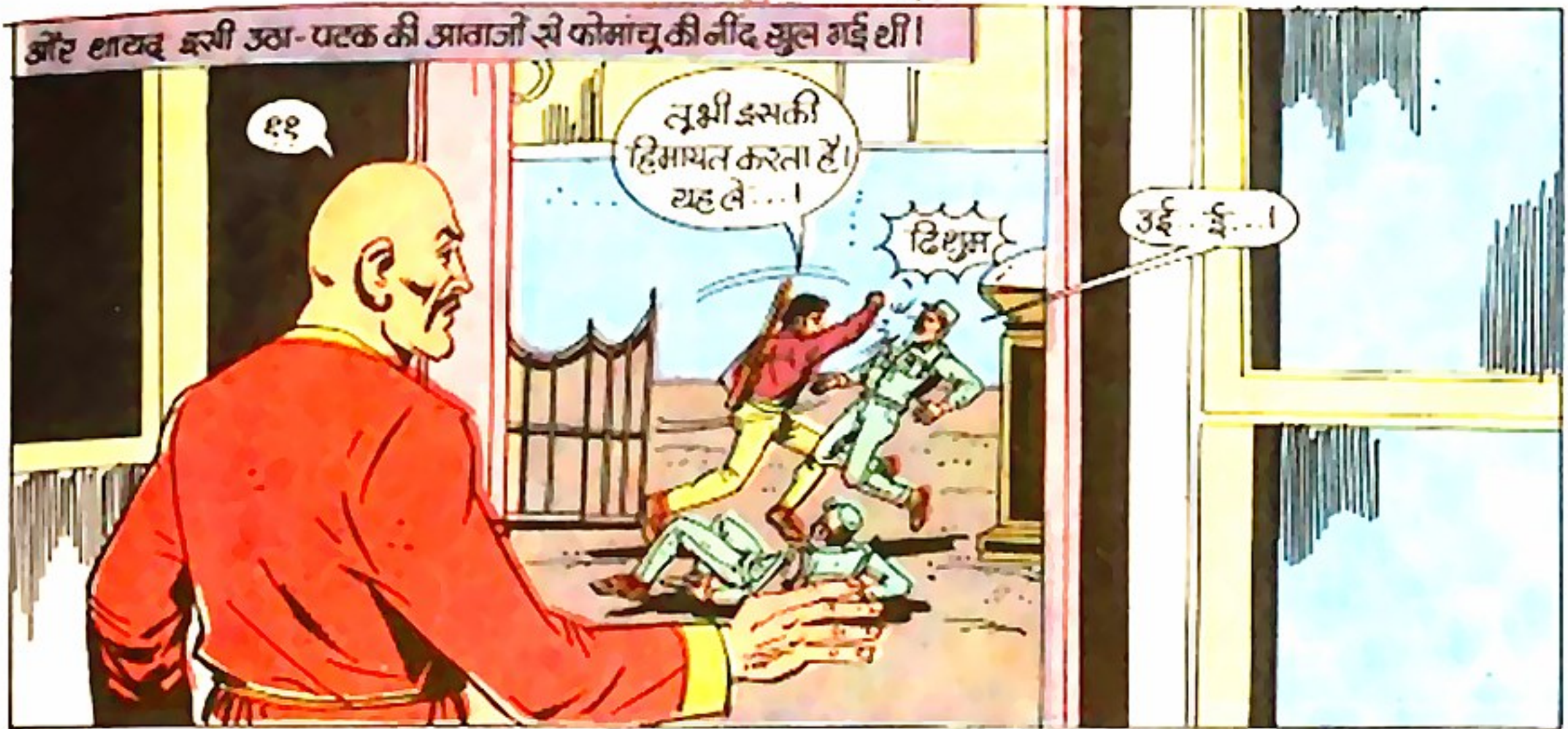
लेकिन इससे पहले कि गार्ड्स अपने आपको आक्रमण के लिए तैयार कर पाते।
तड़...तड़...तड़
आई...!
आह!
खतरा!

और इसी के साथ उसका हाथ अपने वस्त्रों की तरफ रेंगा था, लेकिन अगले ही पल उसे अपनी भूल का एहसास हुआ था...
उफ! मैंने अपने कमरे से बाहर निकलने से पहले अपनी विशेष पोशाक तो पहनी ही नहीं! और यह गलती मुझसे शायद जल्दबाजी से हो चुकी है।
...अगले पल वह अपने कमरे की तरफ भागा।

लेकिन तभी—
मैं कहता हूं रुक जाओ प्यारे काने चचा, वरना यह गोलियां जो तुम्हारे कदमों के आस-पास की धूल उड़ा रही हैं, वही तुम्हारा भेजा भी उड़ा देंगी।
तड़...तड़...तड़

और इस आवाज को सुनकर फोमांचू बुरी तरह चौंक पड़ा था।
त...तुम रहीम! नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। राम-रहीम तो तिहाड़ जेल में मेरे हाथों मारे जा चुके हैं!

राम-रहीम को नहीं काने चचा, तुमने हमारे देश के सीक्रेट सर्विस के दो होनहार एजेंट अजय-समीर को मारा था! और अब मैं तुमसे उन की मौत का बहुत ही भयानक बदला लूंगा।
रमा अपने चेहरे का मास्क उतारता हुआ गुर्राया था।

लेकिन तुम लोग शायद यह भूल रहे हो कि यह तुम्हारे देश भारत की भूमि नहीं, मेरा बसाया हुआ सम्राट ग्रह है और मेरी मर्जी के बिना तुम लोग अपने देश वापस नहीं लौट सकते।
हमारी फिक्र मत करो बूढ़े शैतान! हमने सब इंतजाम कर लिया है। और साथ ही साथ तुम यह भी सुन लो कि मैंने तुम्हारे दोनों पावर हाउसों, प्रयोगशालाओं व शस्त्रागार में टाइम बम फिट कर दिए हैं..

...जो अब से ठीक आधे घंटे बाद फटेंगे। और इसी के साथ तुम्हारी तबाही की कहानी शुरू हो जाएगी। हा...हा...हा।
हरामजादो, यह तुम लोगों ने क्या किया? मेरी वर्षों की मेहनत पर पानी फेर दिया। मैं तुम दोनों को जिंदा नहीं छोड़ूंगा।
कहने के साथ ही कोमाचू ने अपने कमरे की तरफ छलांग लगाई..
...और अगले पल--
रहीम, अगर कोमाचू अपनी पोशाक पहनने में कामयाब हो गया तो हमारे लिए खतरा पैदा हो जाएगा।
भड़ाक
ऐसा कभी नहीं होगा राम भइया!

कहने के साथ ही रहीम ने अपनी जेब से एक दस्ती बम निकाला और--
भड़ाक

रहीम, वह देखो कोमाचू सेफ से अपनी विशेष पोशाक निकाल रहा है।
ईईई

फिर बिना कोई क्षण गवाएं रहीम ने एक दस्ती बम सेफ की ओर उछाल दिया।

लेकिन खतरे का एहसास होते ही फोमाचू ने एक ओर छलांग लगा दी थी।
अड़ाम

???
उफ! कम्बख्तों ने बड़ी भारी चोट दी है। अब यहां से भाग निकलने में ही भलाई है।

तभी—
शोंय
उफ!

चचा, तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है। अब तुम विश्व सम्राट बनने की जगह हमारे साथ चलकर भारत की जेल के मेहमान बनो।

फिर राम-रहीम बेहोश फोमांचू को लेकर उसकी उड़न तश्तरी के पास पहुंचे ही थे कि तभी—